भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परंपरा

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,

अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2023

ISBN : **978 - 81 - 89435 - 69 - 1**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

24

बुद्धकालीन भारत में मानव भूगोल

कृपा शर्मा
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

प्रस्तावना

बुद्धकालीन भारत, अर्थात ईसा पूर्व छठी से चौथी शताब्दी का समय, भारतीय इतिहास का एक ऐसा मोड़ है जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक सभी स्तरों पर गहरे परिवर्तन दिखाई देते हैं। इस अवधि को समझने के लिए केवल ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन पर्याप्त नहीं माना जा सकता। इसकी पूर्ण समझ तभी संभव है जब हम मानव भूगोल के दृष्टिकोण से उन परिस्थितियों की व्याख्या करें जिनमें मनुष्य ने अपनी गतिविधियाँ संचालित कीं, अपने रहने-सहने के ढाँचे बदले, नए आर्थिक व्यवहार अपनाए और प्रकृति के साथ एक नई पारस्परिक ऊर्जा विकसित की। मानव भूगोल मूलतः मनुष्य तथा उसके भौगोलिक परिवेश के बीच सक्रिय संबंधों का अध्ययन है, और बुद्धकालीन भारत इस संबंध की सबसे जीवंत मिसालों में से एक है।

यह युग प्रकृति और मानव क्रिया-कलापों के परस्पर घुलने-मिलने का समय था। नदी घाटियों का विस्तार, कृषि का उन्नत आधार, जंगलों के विस्तृत क्षेत्र, व्यापार मार्गों का उद्भव, जनपदों का निर्माण, शहरीकरण की आरंभिक प्रक्रिया, धार्मिक-दार्शनिक धारणाओं का प्रसार—ये सब तभी संभव हो सके जब मनुष्य ने अपने वातावरण को समझकर उसके अनुरूप अपनी गतिविधियों का रूप गढ़ा। यही कारण है कि बुद्धकालीन भारत का इतिहास वास्तव में मानव भूगोल की पृष्ठभूमि पर ही लिखा गया है। इस अध्याय के माध्यम से हम उस व्यापक ढांचे को समझने का प्रयास करते हैं जिसमें मनुष्य और प्रकृति का संबंध एक नये ऐतिहासिक युग का आधार बन रहा था।

भौगोलिक पृष्ठभूमि - नदियाँ, मैदानी क्षेत्र और प्राकृतिक परिस्थितियाँ

बुद्धकालीन भारत की भौगोलिक पृष्ठभूमि का सबसे सशक्त आधार गंगा और उसकी सहायक नदियाँ थीं। गंगा के साथ बहने वाली यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी

और सोन जैसी नदियों ने न केवल उत्तरी भारत के भूपृष्ठ का निर्माण किया बल्कि मानव बसावट की दिशा भी निर्धारित की। इन नदियों की नियमित जलधारा, उनके द्वारा लाई गई उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और उनकी घाटियों की विस्तृत समतल सतह ने कृषि के विकास को अत्यंत अनुकूल बनाया। जलवायु उस समय पर्याप्त वर्षा वाली थी और ग्रीष्म-शीत का संतुलन प्राकृतिक जीवन के विस्तार के अनुकूल था। इन प्राकृतिक परिस्थितियों ने मनुष्य को न केवल बसने का स्थान दिया बल्कि आजीविका के संसाधन भी प्रदान किए।

घने जंगल इस काल की महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता थे। बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य भारत के अनेक भाग घने वनाच्छादन से आच्छादित थे। ये जंगल भोजन, ईंधन, लकड़ी, फल-फूल तथा औषधियों के प्राकृतिक स्रोत थे। जनजातीय समुदाय इन वनों में रहते थे, जबकि कृषि विस्तार के कारण धीरे-धीरे इन वनों को काटकर नए बसावट क्षेत्रों का निर्माण हुआ। उत्तर-पश्चिम का क्षेत्र अपेक्षाकृत शुष्क माना जाता था, परंतु सिंधु घाटी के अवशेषों के आसपास कुछ क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन का अच्छा विकास था। इस प्रकार प्राकृतिक भूगोल मनुष्य की सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों और राजनीतिक विस्तार की दिशा निर्देशित कर रहा था।

जनसंख्या का वितरण और बसावट का विकास

बुद्धकालीन भारत में जनसंख्या मुख्यत: नदियों के किनारे विकसित हुई। नदी-घाटियों में बसावट इसलिए अधिक थी क्योंकि वहाँ पेयजल, कृषि भूमि, परिवहन और जलसंचयन के प्रचुर साधन उपलब्ध थे। आरंभिक जनसंख्या छोटे-छोटे ग्रामों में संगठित थी, जो उस युग की अर्थव्यवस्था का आधार थे। ग्रामों की संरचना प्राकृतिक पर्यावरण के अनुरूप थी—कहीं वे जंगलों के निकट थे, कहीं नदी की तराई में, तो कहीं कृषि योग्य भूमि के किनारे। इस काल में 'नगर' नामक नई इकाई का तेजी से उदय होना मानव भूगोल का एक महत्त्वपूर्ण चरण है।

वैशाली, पाटलिपुत्र, कौशल की राजधानी श्रावस्ती, वत्स का कौशाम्बी, मगध का राजगृह, अवन्ति का उज्जैन—ये नगर केवल राजनीतिक सत्ता के केंद्र नहीं थे, बल्कि मानव गतिविधियों के जटिल नेटवर्क के निकाय थे जिनसे व्यापार, शिल्प, शिक्षा और धर्म का प्रसार होता था। इन नगरों का विकास मनुष्य और पर्यावरण के बीच स्थापित उस संतुलन को दर्शाता है जिसमें स्थान की विशेषताएँ आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करती थीं। गाँव और नगर दोनों ही मिलकर बुद्धकालीन मानव भूगोल की बसावट पद्धति का उत्कृष्ट चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

कृषि का विकास, साधन और प्राकृतिक संसाधन

बुद्धकालीन भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि थी। गंगा घाटी की जलोढ़ मिट्टी, नियमित वर्षा और नदियों द्वारा निर्मित सिंचाई-सुविधाओं ने इस युग की कृषि को अत्यंत समृद्ध बनाया। लोहे के औजारों का व्यापक उपयोग कृषि के इतिहास में क्रांति के समान था। इससे न केवल भूमि की जुताई आसान हुई बल्कि घने जंगलों को काटकर नए कृषि क्षेत्र बनाने में भी सहायता मिली। इस काल में धान, जौ, गेहूँ, बाजरा, तिलहन, दालें, कपास और गन्ना की खेती होती थी। कृषि उत्पादों की विविधता से अर्थव्यवस्था में स्थिरता आई और अधिशेष उत्पादन उपलब्ध हुआ।

कृषि आधारित मानव भूगोल का यह विकास केवल खाद्यान्न तक सीमित नहीं था। पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, चमड़े और ऊन से जुड़े कार्य भी महत्वपूर्ण थे। प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से मानव ने पर्यावरण के अनुरूप आजीविका का संतुलन बनाया। सिंचाई के लिए तालाबों और कृत्रिम जलाशयों का निर्माण बुद्धकालीन मानव भूगोल का महत्त्वपूर्ण पक्ष था, जिससे कृषि का दायरा बढ़ा और बसावटें स्थिर हुईं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग मानव सभ्यता के विस्तार का मुख्य आधार था।

परिवहन, व्यापार और मार्ग

बुद्धकालीन भारत का मानव भूगोल स्थिर नहीं था, बल्कि अत्यंत गतिशील था। यह गतिशीलता विशेष रूप से व्यापार और परिवहन के मार्गों में दिखाई देती है। उत्तरापथ और दक्षिणापथ इस युग के प्रमुख व्यापार मार्ग थे। उत्तरापथ तक्षशिला से प्रारंभ होकर गंगा घाटी के नगरों से गुजरता हुआ बंगाल तक विस्तृत था, जबकि दक्षिणापथ मध्य भारत होते हुए दक्कन और समुद्री तटों की ओर जाता था। इन मार्गों का चुनाव भूगोल द्वारा निर्धारित था—समतल इलाके, नदी घाटियाँ, पहाड़ी दर्रे और उपजाऊ क्षेत्र व्यापार मार्गों के लिए स्वाभाविक विकल्प बने।

नदी परिवहन विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। गंगा नदी वाणिज्यिक यातायात की मुख्य धुरी थी। व्यापारिक वस्तुओं में धान, कपड़ा, धातु, मिट्टी के बर्तन, मसाले, शहद, नमक, लकड़ी और शिल्प उत्पाद शामिल थे। इन गतिविधियों ने न केवल अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाया बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी बढ़ाया। इस प्रकार परिवहन और व्यापार के विकसित रूपों ने मानव भूगोल को नए आयाम प्रदान किए, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक संपर्क सुदृढ़ हुए।

सामाजिक संरचना, जनजातियाँ और सांस्कृतिक परिदृश्य

बुद्धकालीन भारत में समाज बहुआयामी था। वर्ण व्यवस्था प्रचलित अवश्य थी, परन्तु आर्थिक परिवर्तन और व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार से सामाजिक गतिशीलता बढ़ रही थी। शहरी क्षेत्रों में व्यापारी, कारीगर और शिल्पी वर्ग का उदय हुआ, जो कृषि-केंद्रित ग्रामीण संरचना से भिन्न था। जनजातीय समुदाय घने जंगलों में बसे थे और उनकी जीवन-शैली भौगोलिक परिस्थितियों से प्रत्यक्ष प्रभावित होती थी। कहीं वे शिकार और संग्रह पर आधारित थे, तो कहीं वे अर्ध-कृषि गतिविधियों में संलग्न थे।

इस काल का सांस्कृतिक परिदृश्य मानव भूगोल से अभिन्न रूप से जुड़ा था। बौद्ध और जैन धर्मों का उदय उन्हीं क्षेत्रों में हुआ जहाँ जनसंख्या घनी थी, नगर व्यवस्थित थे और आर्थिक समृद्धि का आधार मौजूद था। यही कारण है कि बुद्ध के अधिकतर उपदेश गंगा के दोआब और मगध क्षेत्र में प्रसारित हुए। इस प्रकार भूगोल ने धार्मिक आंदोलनों की दिशा निर्धारित की। जनजातियों, ग्रामीण समाज और नगरवासियों की सांस्कृतिक विविधता का समन्वय भी इसी भौगोलिक आधार पर निर्मित हुआ।

शहरीकरण और मानव-पर्यावरण संबंध

बुद्धकालीन भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया आरंभिक स्वरूप में दिखाई देती है। नगर केवल जनसंख्या का केंद्र नहीं थे, बल्कि वे मनुष्य और पर्यावरण की सहजीवी गतिशीलता का प्रकाशन थे। नगरों की स्थापना प्राकृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर की जाती थी—जैसे जल स्रोत के निकट होना, व्यापार मार्गों का मिलन बिन्दु होना, उपजाऊ क्षेत्र का विस्तार, शिल्प संसाधनों की उपलब्धता आदि। ये सभी तत्व भूगोल द्वारा प्रदान किए गए थे और उन्हीं के आधार पर नगरों का स्वरूप विकसित हुआ। पाटलिपुत्र इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ गंगा और सोन नदियों के संगम पर विशाल राजनीतिक-आर्थिक केंद्र स्थापित हुआ।

मानव-पर्यावरण संबंध इस बात में स्पष्ट दिखाई देता है कि मनुष्य ने प्रकृति के संसाधनों का उपयोग मर्यादित रूप में किया और बदले में प्रकृति ने उसे स्थिर आजीविका प्रदान की। जंगलों की कटाई हुई अवश्य, परंतु कृषि विस्तार के लिए आवश्यक मात्रा में। नदी-तंत्र के संरक्षण का ध्यान रखा गया, और जलाशयों का निर्माण कर मानव गतिविधियों को अधिक स्थिर बनाया गया। परस्पर सहयोगकारी संबंध ने बुद्धकालीन भारत को संतुलित और टिकाऊ मानव भूगोल प्रदान किया।

संपूर्ण विवेचन का सार यह है कि बुद्धकालीन भारत का मानव भूगोल एक

अत्यंत समृद्ध, संतुलित और विकसित स्वरूप का परिचायक है। इस युग में प्रकृति और मानव दोनों ने एक-दूसरे के अनुरूप स्वयं को ढाला। उपजाऊ भूमि, नदी घाटियाँ, वन क्षेत्र, जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों ने मानव जीवन को आकार दिया। इसके बदले मनुष्य ने कृषि, व्यापार, बसावट, शहरीकरण और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से पर्यावरण को नए रूप प्रदान किए। मानव और भूगोल की यह पारस्परिकता ही उस युग के सामाजिक-आर्थिक और धार्मिक परिवर्तन की आधारशिला है।

बुद्धकालीन भारत का मानव भूगोल केवल उस समय के जीवन का अध्ययन नहीं, बल्कि यह समझने का भी माध्यम है कि कैसे भूगोल किसी सभ्यता की दिशा और उसके भविष्य को निर्धारित करता है। यह युग भारतीय इतिहास में इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसमें मानव और प्रकृति के संबंध सर्वोत्तम संतुलन की अवस्था में थे, जिसने आने वाले युगों की सामाजिक संरचना, आर्थिक संतुलन और सांस्कृतिक धारा को स्थायी स्वरूप प्रदान किया।